डॉ॰ संगीता राय
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज, आरा

रत्नावली → चरित्र चित्रण : उदयन

राजा उदयन रत्नावली नाटिका का धीरललित नायक है। साहित्यदर्पण में वर्णित धीर-ललित नायक निश्चिन्त, मृदुल तथा सदा कला-परायण कहा गया है—

"निश्चिन्तो मृदुरनिशं कलापरो - धीरललितः स्यात्।"

यह सभी गुण उदयन में विद्यमान थे क्योंकि राज्य-भार से वह निश्चिन्त था - अर्थात् अपने पराक्रम से शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर राज्यभार योग्य मन्त्रियों को सौंप चुका था— "राज्यं निर्जितशत्रुयोग्यसचिवे न्यस्तः समस्तो भरः" इति।

उसका सभी के साथ मृदु-व्यवहार था अर्थात् वह धन का अभिमान न कर अपने सेवक वर्ग के साथ भी अतीव नम्रता का व्यवहार करता था। परिचारिका सुसंगता से— "सुसंगते! स्वागतम् इहोपविश्यताम्। कथमिहस्थो भवत्या ज्ञातः" राजा उदयन के मृदु व्यवहार का उत्तम उदाहरण है। वह कलाविद् भी था क्योंकि सेनापति रुमण्वान् के भांजे विजयवर्मा के द्वारा कोसलाधीश के शौर्य की प्रशंसा शत्रु होते हुये ही वह स्वयं ही करने लगा — "साधु कोसलपते! साधु। मृत्युरपि ते श्लाघ्यो यस्य शत्रवोऽप्येवं पुरुषकारं वर्णयन्ति"। मदन महोत्सव का मनाया जाना भी उसकी कला-परायणता ही मानी जा सकती है, क्योंकि कलानभिज्ञ व्यक्ति, गीत वाद्यादि, संगीत परक उत्सवों का आयोजन कदापि नहीं कर सकता है। ऐन्द्रजालिक द्वारा दिखाया गया इन्द्रजाल प्रदर्शन भी इसी का द्योतक है। इस प्रकार लक्षण में वर्णित सभी धीरललित नायक के गुणों का उसमें समावेश था।

इसके अतिरिक्त अन्य गुण भी राजा उदयन के चरित्र में स्पष्ट मिलते हैं। यद्यपि रत्नावली नाटिका केवल दो दिन की घटनाओं का वर्णन है तथापि उदयन के वीरतादि अन्य गुण भी उसमें सरलतया देखे जा सकते हैं। 'राज्यं निर्जितशत्रु' से उदयन का कायर होना नहीं ज्ञात होता है। वह अपने पराक्रम से पूर्व ही शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर चुका है और वीर-पुरुष ही अन्य वीर की प्रशंसा भी कर सकता है। कौसलपति के पराजित होने का समाचार पाकर हठात् उसकी प्रशंसा ~~भी कर सकता~~ राजा स्वयं अपने मुँह से करने लगता है। वह प्रिय एवं उदार है। उदारता से परोपकार करते समय वह अपने को भी संकट में डालते समय हिचकता नहीं है। अन्तःपुर में लगी हुई आग से भयभीत होकर वासवदत्ता जब सागरिका (रत्नावली) को अन्तःपुर में बन्द आग से बचाने के लिए उदयन को कहती है तो वह जलती हुई आग में कूदकर उसे बचा लेता है। वह अनुपम सुन्दर भी है। क्योंकि सुन्दरियाँ उसके रूप लावण्य पर बरबस मुग्ध हो जाती हैं। सागरिका (अनुपमा सुन्दरी) प्रथम बार ही उदयन को देखकर कहने लगती है — "पर प्रेषणदूषितमपि मे जीवितमेतस्य दर्शनेनेदानीं बहुमतं सम्वृत्तम्। उदयन उच्च कुलाभिमानी भी है क्योंकि सागरिका पर अनुरक्त होते हुए भी वह सागरिका के कुलीन होने की बात ज्ञात होने पर ही वसन्तसेना के कहने पर अपनी पत्नी बनाने का साहस कर सका, वैसे विलासी होना राजा का एक स्वाभाविक गुण है तदनुकूल ही वह सागरिका पर मुग्ध भी हो गया। इस प्रकार नाटिका के "लोके हरि च वत्सराजचरितम्" के अनुसार राजा लोकरंजक भारतीय शासक था।

—x—